

उस दिन काम नहीं बन रहा था। बेहद बैचैनी थी। सृष्टि के विराट आकाश की तरह, रंग-आकाश की शक्तियाँ विचित्र हैं। इनपर हमारा काबू नहीं। सालों के श्रम के बाद ऐसा होना असह्य लगता था। कृष्ण सूर्य से निकले हुए रंग, खुद बाधारे डाल रहे थे। दो भागों में बटा 'चित्र' विरोधी तत्वों के बीच, क्लेश में, धुन्धला सा, थका हुआ लगा, अपनी निजी शक्तियों के नियन्त्रित किये बिना, सफेद दीवार पर, असहाय। रुकना होगा, मैंने कहा, हम देने के लिये विराम आवश्यक है। इन परिस्थितियों में मुझे केवल 'कविता' से ही सक्न मिलता है। जानकर, धीरे, बहुत धीरे, अपने लिये ही, करुणामय प्रार्थना के समान, 'मीर' के काव्य पढ़ने लगा :

"बेरुदी ले गई कहाँ हमको
दूर से इन्तजार है अपना।"

"खबर कुछ तो आई है उस बेखबर तक "

"सिराने 'मीर' के आदिस्ता बोलो...

वकायक टेलीफोन की घन्टी बजी। एक शान्त और गंभीर आवाज़ थी, "मैं कविता लिखता हूँ। कुछ दिन ही हुए हैं, दिल्ली से आया हूँ। आपसे मिलना चाहता हूँ, चित्र देखना चाहता हूँ।"

मैंने फौरन कहा, "चित्र तो बन ही नहीं रहा है आज। पर आइये जरूर, शायद कविता से सहारा मिलेगा। हाँ, पांच बजे ठीक है।"

जवाब था, "दो बजे बहतर होगा। मैं दोपहर बच्चों को बाग़ में ले जा रहा हूँ। नहीं, मेरे नहीं, पड़ोस के ..."

"आइये, मैं इन्तजार करूँगा," मैंने धैर्य से कहा।

बात खूबसूरत लगी। थके हुए दिन के ये पहले सुखद क्षण थे। तो आज भी दिल्ली में कविता लिखना संभव है, इस बुलन्द शहर में जहां 'भीर' और 'मजाज़' को चैन न मिला। आज भी क्या वह हो सकता है कि एक भारतीय पेरिस आकर बच्चों को बाग में सैर कराने के लिये समय निकाल सके। मैंने सोचा कि ऐसे शुद्ध और प्रारंभिक विचार तो एक कवि के मन में ही आ सकते हैं। अधिकतर दर्शक यहां आकर लूवर, ओपेरा या नाइट क्लब में ही व्यस्त रहते हैं। बच्चों या फूलों के लिये यहां किस समय है।

काला बिगड़ा हुआ चित्र मुझे देख रहा था, मानों कह रहा हो : "संधर्ष छोड़ दिया।" नहीं, संधर्ष छोड़ना मैं नहीं जानता। क्वपन से ही सुभाव, साधन, मार्ग मिले हैं : आग्रह, एकाग्रह, भक्ति, कार्य-संकल्प और प्रार्थना। दमोदर के स्नेहमय गीत आज भी याद हैं, "ज्यों ज्यों डूबत श्याम में, त्यों त्यों उज्ज्वल होव।" हाँ, यही होगा, मुझे मालूम है, मैं उपस्थित हूँ, डूबना है, इन्हीं अव्यारख्येय शक्तियों में, इन्हीं में जीवन है, इन्हीं में मोक्ष।

समय था प्रार्थना का। अनुभव मार्ग दिखाता है। एक मजदूर की तरह दैनिक कार्य से समझ मिलती है। चित्र जल्दी में नहीं बनते हैं। धैर्य और प्रतीक्षा आवश्यक हैं। अनकूल क्षण, सहज, जन्मगत वातावरण, अन्तर्बोध केवल श्रय से नहीं मिलते हैं। सृष्टि-विधि ही सर्वश्रेष्ठ है। रचनात्मक क्रियाओं में दिव्य उत्कृष्ट और शक्ति शाली आन्तरिक प्रेरणाएँ सक्रिय हैं। इस विराट ब्रह्माण्ड में बुद्धि, तर्क - तुच्छ है। मंसा प्रत्यक्षता परम बोध है। कार्य आधार है। विचार शक्ति मानव जाति की विशेषता अवश्य है, हमारा वहमूल्य साधन है, पर हमें सम्मनना है कि और भी शक्तियाँ सहायक हैं जिनका अभी हमें पूरा पान नहीं। जीवन में, या चित्र रचना में हम सोचना तो कभी बन्द नहीं करते, किन्तु यह प्रक्रिया तभी अधिक सफल लगती है, जब चित्र नहीं बनते हैं, या जब हम दूसरे चित्रकारों की कृतियाँ देखते हैं और उन्हें सम्मनना चाहते हैं।

सोचते सोचते, मैंने सोचा कि शब्दों का संसार तो और भी कठनाइयों से भरा होगा। कविता को हम न देख सकते हैं, न छू सकते हैं। फिर भी